ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 15, Issue 9, Sep 2025 Impact Factor 8.059 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

कालीबंगा से ज्ञात सभ्यता एवं संस्कृति

डॉ. विजय शंकर कोशिक

शोध निर्देशिक , इतिहास विभाग

टाँटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर (राज.)

जगत नारायण

शोधार्थी, इतिहास विभाग

टाँटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर (राज.)

साराशं –

भारतीय संस्कृति मानव समाज की एक अमूल्य निधि है। अपनी अनेक अनूठी विशेषताओं के कारण ही भारतीय संस्कृति को अमर कहा जाता है। भारतीय संस्कृति की पावन धारा का प्रवाह उस धूमिल अतीत से प्रारंभ होता है जिसकी सीमाओं के चिंतन में हमारे अनुमान के पैर लड़खड़ाते हैं। पिछले पांच–छह हजार वर्षों के विस्तृत काल क्षेत्र में इस पुनीत सरस्वती की संजीवनी धारा कहीं–कहीं इतिहास के अज्ञात प्रखण्डों में खोई हुई सी प्रतीत होती है लेकिन अधिक अन्वेषित क्षेत्रों के सुरम्य स्थलों में, पतित पावनी जाह्नवी के समान उसका प्रवाह विस्तृत, अबाध है एवं सुप्रकाशित दिखाई देता है। यदि विश्व की कोई संस्कृति अमर कही जा सकती है। तो निःसंदेह भारतीय संस्कृति ही वह संस्कृति है। विश्व की प्राचीनतम् संस्कृतियां कला के कराल गाल में समा चुकी है। केवल कुछ ध्वंसावशेष ही उनकी गौरव गाथा गाने के लिये बचे हुए हैं। किन्तु भारतीय संस्कृति कई हजार वर्ष तक काल के क्रूर थपेड़ों को सहती हुई आज भी जीवित है और विश्व की जनसंख्या का एक वृहत भाग उसकी संजीवनी शक्ति के द्वारा ही अनुप्राणित है। प्राचीन भारतीय संस्कृति में हड़प्पा सभ्यता का अपना विशेष महत्व है। अतः हड़प्पा सभ्यता के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिये निम्नलिखित बिन्दुओं पर अध्ययन आवश्यक है।

इसी सभ्यता के अंतर्गत राजस्थान के उत्तर–पश्चिमी भाग में स्थित कालीबंगा (Kalibangan) एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण पुरातात्त्विक स्थल है। इसका स्थान आज के हनुमानगढ़ जिले में, प्राचीन सरस्वती नदी (वर्तमान घग्घर नदी) के तट पर है। कालीबंगा की खोज 1950 के दशक में हुई और इसके उत्खनन कार्य 1960 से 1969 के मध्य भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (Archaeological Survey of India & ASI) के निदेशक डॉ. बी. बी. लाल तथा डॉ. बी. के. ठाकुर के निर्देशन में सम्पन्न हुए।

कालीबंगा का महत्त्व इस तथ्य में निहित है कि यहाँ से प्राक–हड़प्पा एवं परिपक्व हड़प्पा दोनों कालों के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं, जिससे हड़प्पा सभ्यता के विकासक्रम की निरंतरता को समझने में सहायता मिलती है। यह स्थल नगर नियोजन, वास्तुकला, धार्मिक जीवन और सामाजिक संरचना के संदर्भ में अद्वितीय साक्ष्य प्रस्तुत करता है।

भाब्द संकेत – सरस्वती नदी, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, नगर नियोजन, वास्तुकला

1.भूमिका

कालीबंगा का उत्खनन भारतीय पुरातत्व के इतिहास में एक ऐसा मील का पत्थर है जिसने सिंधु घाटी सभ्यता के पूर्ववर्ती और परवर्ती दोनों चरणों को समझने का अवसर प्रदान किया। यह स्थल राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में घग्घर नदी

ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 15, Issue 9, Sep 2025 Impact Factor 8.059 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

(प्राचीन सरस्वती) के तट पर स्थित है। 1952 में यहाँ पहली बार अवशेषों की खोज हुई और 1960 से 1969 तक भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के नेतृत्व में बी. बी. लाल और बी. के. ठाकुर के निर्देशन में व्यवस्थित उत्खनन संपन्न हुआ।

2 स्थल की भौगोलिक स्थिति

कालीबंगा 29° 28' उत्तर अक्षांश और 74° 08' पूर्व देशांतर पर स्थित है। यह स्थल वर्तमान हनुमानगढ़ नगर से लगभग 205 किलोमीटर उत्तर–पश्चिम में स्थित है। स्थल का क्षेत्रफल लगभग 1 किलोमीटर लंबा और 500 मीटर चौड़ा है। यह स्थान प्राचीन काल में घग्घर नदी के किनारे बसा हुआ था, जो सिंधु नदी की एक सहायक धारा मानी जाती है। नदी के सूख जाने के बाद ही यह नगर परित्यक्त हुआ। हड़प्पा सभ्यता का क्षेत्र सिंधु और घग्घरदृहकरा (प्राचीन सरस्वती) नदियों के तटों पर फैला हुआ था। इसका विस्तार वर्तमान पाकिस्तान, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान और गुजरात तक फैला था।

3 हड़प्पा सभ्यता का उद्भव

हड़प्पा सभ्यता का अभिज्ञान पुरातत्व विज्ञान की एक महत्वपूर्ण देन है 1826 ई. में सर्वप्रथम "चार्ल्स मेशन" ने हड़प्पा टीले की ओर ध्यान आकर्षित किया। लेकिन कोई उत्खनन कार्य नहीं हो पाया। उसने हड़प्पा टीले को सिकन्दर महान् के समय का समझा। 1856 ईस्वी में भारत सरकार के निरीक्षण में कराची एवं लाहौर (वर्तमान पाकिस्तान) के मध्य रेल लाइन बिछाए जाने हेतु समीप के खण्डहरों से ईटें निकाली जाने लगी थीं। उस वक्त अंग्रेज ठेकेदार "जॉन बर्टन" व "विलियम बर्टन"ने हडप्पा टीले की ओर पुनः ध्यान आकर्षित किया तथा इन खण्डहरों में मोन्टगोमरी कस्बे का हड़प्पा नामक खण्डहर भी था। परंतु उस समय तक इस तथ्य का बोध नहीं हो सका कि इन खण्डहरों के नीचे एक विशाल सभ्यता की बहुमूल्य सामग्री सुरक्षित है। 1872 ईस्वी में तत्कालीन पुरातत्व विभाग के महानिदेशक "अलैकजेण्डर कनीर्घम" ने हड़प्पा टीले का दौरा किया तथा कुछ पुरातात्विक वस्तुएं एकत्र कीं, किन्तु वह इन वस्तुओं का काल निर्धारण नहीं कर पाया। इसके पश्चात 1920 ईस्वी में माधोस्वरूप वत्स एवं दयाराम साहनी के पर्यवेक्षण में महत्वपूर्ण कार्य प्रारंभ हुआ। इन दोनों ने आधुनिक पाकिस्तान में पंजाब प्रांत के "साहिवाल" जिले के "मोन्टगोमरी" कस्बे में रावी नदी के तट पर स्थित हड़प्पा टीले का उत्खनन किया। 1922 में राखालदास बनर्जी ने पाकिस्तान के सिन्ध प्रान्त के "लरकाना" जिले में स्थित मोहनजोदड़ों स्थल जो सिन्धु नदी के तट पर था उसका उत्खनन कार्य किया गया। प्रख्यात पुराविद् जॉन मार्शल ने हड़प्पा के विषय में 1924 ईस्वी में एक रिपोर्ट दी और एक लम्बे समय से विस्मृत सभ्यता के बारे में बताया। यह सभ्यता उतनी ही प्राचीन थी जितनी कि मिस्र एवं मेसोपोटामियां सभ्यताएं। 1946 ईस्वी में व्हीलर ने हड़प्पा में कार्य किया और एच.डी. सांकलिया, एस.आर. राव, गार्डन चाईल्ड आदि पुराविदों ने हड़प्पा स्थल के विविध पक्षों की समीक्षा में रूचि ली। हड़प्पा सभ्यता की खोज ने भारतीय सभ्यता के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ दिया। आर.सी. मजूमदार ने लिखा है कि आर्यो के साहित्य वेदों से ही पहली बार हमें भारत के सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक आदि अवस्थाओं का विस्तृत परिचय मिला। फलतः यह अवश्यंभावी था कि व्यवहारिक दृष्टि से भारत का इतिहास इस काल से प्रारंभ किया जाए और भारतीय संस्कृति की रूपरेखा का आरंभ आर्य सभ्यता से हो। किन्तु 1922– 23 ईस्वी में होने वाली एक युग निर्मातृ खोज के परिणाम स्वरूप इस धारणा में परिवर्तन हुआ। हड़प्पा सभ्यता की उत्पत्ति का प्रश्न रहस्यमय इसलिये बना हुआ था क्योंकि इसके प्रमुख केन्द्र हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों से जो अवशेष प्राप्त हुए हैं, वे इसकी

विकसित अवस्था को ही दर्शाते हैं एवं इन स्थलों से सभ्यता का प्रारंभिक स्वरूप स्पष्ट नहीं हो पाया। इस सभ्यता के प्रकाश में आने के साथ ही उसकी उत्पत्ति, तिथ्यांकन एवं विकास का प्रश्न पुरातत्वेत्ताओं के लिये एक चुनौती रहा है। इसकी उत्पत्ति के प्रश्न को लेकर विद्वानों में मतभेद है।

बलूचिस्तान के क्वेटा के नजदीक मेहरगढ़ नामक स्थान पर किये गये उत्खननों से हड़प्पा सभ्यता के उद्गम के बारे में नई जानकारी मिली है। जारीज एवं उनकी फ्रांसीसी टीम को मेहरगढ़ से 6000 ईस्वी पूर्व तक के अवशेष मिले हैं और जारीज आदि पुराविदों को उम्मीद है कि तथ्यों के आधार पर इस सभ्यता के उद्गम के जटिल सवाल के चन्द पहलू का प्रत्युत्तर हमें मेहरगढ़ से प्राप्त हो सकेगा।

प्रारंभ में कुछ विद्वानों ने इसकी उत्पत्ति पश्चिमी एशिया (मेसोपोटामियां) में ढूंढने का प्रयास किया जबकि कुछ पुराविदों ने इसका उद्गम ईरान– बलूची – सिंध संस्कृतियों से माना है। अर्वाचीन भारतीय पुराविदों ने भारत की ग्रामीण संस्कृतियों में इसका स्रोत ढूंढने का प्रयास किया है।

4 हड़प्पा सभ्यता के प्रमुख स्थल –

हड़प्पा सभ्यता के प्रमुख स्थल बहुत बड़े क्षेत्र में विस्तृत थे जिन्हें संक्षिप्त रूप से इस प्रकार समझा जा सकता है –

1. कश्मीर में माँदा
2. बलूचिस्तान में – सुत्काजेन्डोर, सोत्काकोह, नौशारो, डाबरकोट, बालाकोट आदि।
3. उत्तरी–पश्चिमी सीमान्त प्रान्त में – गुमला
4. सिन्ध (पाकिस्तान) में – मोहनजोदड़ो, चन्हुदड़ो, जुरजोदड़ो, लहूमजोदड़ो, अमरी, कोटदीजी आदि।
5. पाकिस्तान के पश्चिमी पंजाब में – हड़प्पा, डेरास्माइल, सरायखोला, रहमानडेरी, जलीलपुर, गनेरीवाल आदि स्थल प्राप्त हुए हैं।
6. राजस्थान में – कालीबंगा।
7. भारत का पंजाब (पूर्वी पंजाब) – रोपड़, संघोल, बाड़ा, चंडीगढ़।
8. उत्तर प्रदेश – आलमगीरपुर, उल्लास (सहारनपुर)
9. हरियाणा – बनावली, राखीगढ़ी, मीताथल, भगवानपुर, कुणाल, बालू।
10. गुजरात – सूरकोत्दा, रंगपुर, लोथल, भगत राव, रोजदी, धोलावीरा, देशलपुर, प्रभाष पाटन, पाद्री (गुजरात में सबसे ज्यादा हड़प्पा सभ्यता के स्थल प्रकाश में आये हैं।
11. अफगानिस्तान में मुख्य स्थल शोर्तुघई, मुण्डीगाक।
12. महाराष्ट्र में – दायमाबाद।

5. हड़प्पा सभ्यता की मुद्रायें और मुद्राछापें

ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 15, Issue 9, Sep 2025 Impact Factor 8.059 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

हड़प्पा सभ्यता के प्रायः सभी महत्वपूर्ण स्थलों के उत्खनन से मुद्रायें मिली हैं। इनमें से अधिकांश पर चित्रलिपि में लेख जो साधारणतः 3 से 8 अक्षर वाले हैं। मोहनजोदड़ों से कुल मुद्राओं का 68 प्रतिशत मुद्रायें प्राप्त हुई हैं और 19 प्रतिशत हड़प्पा से शेष अन्य स्थलों से कुल मिलाकर 13 प्रतिशत ही मुद्रायें मिली हैं। ये मुद्रायें विभिन्न पदार्थो से निर्मित की जाती थीं किन्तु सबसे अधिक सेलखड़ी की मुद्रा है यहां कांचली मिट्टी तथा तांबे की मुद्रायें भी मिली हैं। आकार प्रकार की दृष्टि से मुद्राओं में विविधता है। ये वर्गाकार चतुर्भुजाकार, बेलनाकार, बटन जैसी, घनाकार और गोल है ।

मनके – हड़प्पा सभ्यता के मृद्भाण्ड निर्माण और मुद्रा निर्माण के समान ही मनकों का निर्माण भी एक विकसित उद्योग था। यों तो हड़प्पा सभ्यता के सभी स्थलों से मनके मिले हैं किन्तु हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, चन्हुदड़ो और लोथल से मनके बहुत बड़ी संख्या में मिले हैं। चन्हुदड़ो में मनके बनाने का कारखाना स्थापित था। यहां पर मनके कांचली मिट्टी, मिट्टी, शंख, हाथी दांत आदि के मनके पाये गये हैं।

6. हड़प्पा सभ्यता का धार्मिक जीवन –

हड़प्पा सभ्यता के धार्मिक जीवन से संबंधित कोई साहित्यिक सामग्री उपलब्ध नहीं होती। जानकारी के सभी साक्ष्य पुरातत्व संबंधी हैं। मुद्राओं, मृद्भाण्डों, ताम्रपत्रों पर जो लेख मिले हैं। वे पढ़े नहीं जा सके हैं। अतः धार्मिक जीवन के संबंध में जानकारी पुरातात्विक स्रोतों से प्राप्त होती हैं। यहां से प्राप्त मूर्तियां, मुद्रायें, मृद्भाण्ड, पत्थर, पत्थरों से निर्मित लिंग, चक्र की आकृतियां, ताम्र फलक कुछ विशिष्ट भवन आदि धार्मिक जीवन के बारे में साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं। यहां के निवासी मुख्यतः जल की पवित्रता, मातृदेवी की उपासना, शिव पशुपति, लिंग पूजा, वृक्ष पूजा, पशु पूजा आदि में अपनी आस्था रखते थे। हड़प्पा सभ्यता का धार्मिक जीवन द्विदेवता मूलक था। अर्थात् दो देवताओं की एक साथ पूजा की जाती थी। इसके अंतर्गत परम पुरूष व परम नारी की उपासना करते थे। इस प्रकार हड़प्पा सभ्यता भारत की अति प्राचीनतम सभ्यता एवं संस्कृति है। इस सभ्यता का महानतम केन्द्र कालीबंगा का अपना विशेष स्थान है। इसका विवेचन आगे के अध्यायों में प्रस्तुत किया गया है।

7. हड़प्पा सभ्यता का पतन

लगभग 1900 ई.पू. के बाद हड़प्पा सभ्यता का धीरे–धीरे पतन होने लगा। इसके कारणों पर विद्वानों में मतभेद हैं –

- जलवायु परिवर्तन (Climatic Change) – नदियों का सूख जाना (विशेषतः सरस्वती /घग्घर)।
- बाढ़ और भूकंप – नगरों का विनाश।
- आर्थिक पतन – व्यापार मार्गों का अवरुद्ध होना।
- आर्यों का आगमन – सांस्कृतिक मिश्रण एवं परिवर्तन।

हालाँकि अब आधुनिक पुरातात्त्विक अनुसंधान यह मानता है कि सभ्यता का पतन अचानक नहीं, बल्कि धीरे–धीरे हुआ और कई नगरों ने क्षेत्रीय संस्कृतियों के रूप में जीवित रहकर भारतीय सभ्यता की निरंतरता बनाए रखी।

8. सभ्यता और संस्कृति की कड़ी के रूप में कालीबंगा

हड़प्पा सभ्यता के प्रकाश में आने के पश्चात् देश की सभ्यता एवं संस्कृति के इतिहास में एक नया मोड़ आया। पहले वैदिक सभ्यता को ही अति प्राचीन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति माना जाता था, लेकिन अब यह धारणा बदल चुकी है। अब हड़प्पा सभ्यता को वैदिक सभ्यता से प्राचीन माना जाने लगा है। भारत वर्ष के अनेक स्थलों पर हड़प्पा सभ्यता के अनेक स्थल प्रकाश में आए। यह गौरव की बात है कि राजस्थान का एक मात्र स्थल कालीबंगा भी ऋहड़प्पा सभ्यता का एक प्रमुख नगर के रूप में पहचाना गया है, जिसे प्राचीन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की कड़ियों को जोड़ने में मदद मिली है। अब राजस्थान का नाम विश्व सभ्यता एवं संस्कृति की दृष्टि से विशेषकर पुरातात्विक दृष्टि से विश्व मानचित्र पर अपनी विशिष्ट पहचान को लेकर सामने आया है।

9. निष्कर्ष –

(क) ऐतिहासिक और भौगोलिक दृष्टि से

- कालीबंगा का विकास घग्घर नदी के तट पर हुआ, जो सिंधु सभ्यता के दक्षिण–पूर्वी विस्तार का साक्षी है।
- यह नगर प्राग–हड़प्पा और हड़प्पा दोनों कालों के अवशेष समेटे हुए है, जिससे संस्कृति की निरंतरता सिद्ध होती है।

(ख) नगर–योजना के संबंध में

- कालीबंगा की नगर योजना ग्रिड प्रणाली पर आधारित थी कृ सड़कें समकोण पर मिलती थीं और संपूर्ण बस्ती एक योजनाबद्ध ढांचे में निर्मित थी।
- घरों की संरचना, जलनिकासी व्यवस्था, और सार्वजनिक मार्गों की योजना हड़प्पा सभ्यता के तकनीकी परिपक्वता को दर्शाती है।
- नगर को दो भागों में बाँटा गया था कृ ऊपरी नगर (ब्पजंकमस) और निचला नगर (स्वूमत ज्वूद) कृ जो सामाजिक विभाजन और प्रशासनिक संगठन को इंगित करता है।

(ग) धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से

- अग्निवेदियों की उपस्थिति यह दर्शाती है कि धार्मिक अनुष्ठान कालीबंगा के सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग थे।
- प्राप्त राख, पशु–अस्थियाँ और प्रतीकात्मक चिन्ह वैदिक यज्ञ परंपरा की पूर्वभूमि की ओर संकेत करते हैं।

संदर्भ सूची

1. Bala, Madhu, "The Pottery in Jagat Pati Joshi EÛcavations at Bhagwanpura 1975&1981,New Delhi, 1993.
2. Durrani, F.A.: 1988, Eucavations in cromal valley rehman Dheri Education report, Anicent Pakistan No- 1, (Peshawar)

3. Ghosh. A, "The Rajputtana Desert its Archaeological Aspect" Bulletin of the council of National instiute of science of India (Calcultta 1952)
4. Lal B.B. "A New Indus Valley Provincial Capital Discovered; Education at Kalibanga in Northern Rajasthan." London News (1962)
5. कौशाम्भी, धर्मानन्द , प्राचीन भारत की संस्कृति और सभ्यताएं , नई दिल्ली, पटना, 1990
6. पल्यायल के.के., संकट प्रसाद शुक्ल, सिन्धु सभ्यता, नई दिल्ली, 2007
7. "पधारो राजस्थान", पर्यटक गाइड, जोधपुर, जयपुर
8. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण जयपुर मण्डल
9. राजस्थान राज्य अभिलेखाकार, बीकानेर ।
10. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग, नई दिल्ली।